भूगोल के विकास मे हेटनर के योगदान की व्याख्या किजिए

हेटनर का जन्म पश्चिमी जर्मनी मे 1859 ई० मे हुआ। वह अपने समय का एक ऐसा विद्वान हुआ जिसने प्रारम्भ से ही अपनी उच्च शिक्षा का लक्ष्य भूगोल का विशद एवं विवेकपूर्ण अध्ययन करना माना। भूगोल मे उच्च शिक्षा हेतु उसने हेले बान एवं स्ट्रासवर्ग विश्वविद्यालयों मे शिक्षा प्राप्त किया। प्रारम्भ मे व किरचॉफ एवं फिशर के विचारों से प्रभावित हुआ। उसने 1881 ई० मे महान् भूगोलवेत्ता जरलैण्ड की उपाधि ग्रहण की 1881 ई० से पुर्व उसने भूगोल के चिन्तन एवं दर्शन पर जलवायु एवं भूमि विज्ञान विषय पर की गयी शोध पर डाक्टरेट की उपाधि ग्रहण की
कई वर्षो तक रेटजेल के सान्निध्य मे भी रहा फिर भी वह रेजपेल से अधिक रिचथोफन से प्रभावित हुआ।

भूगोल को देन – हेटनर ने हम्बोल्ट डेविस एवं रिचथोफन आदि विद्वानों की भाँति विश्व के अगम्य अज्ञात एवं सुदूर प्रदेशों की एशिया अफ्रीका दक्षिणी अमरीका एवं यूरोप महाद्वीप की यात्रा की इसके साथ इन प्रदेशों से उपलब्ध ज्ञान का उपयोग एक सफल भूगोलवेता की भाति नवीन विचार विकसित करने मे किया 1881 मे अपने शेष जीवन काल तक उसने बराबर भूगोल के दर्शन को सजीव बनाये रखा।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान

इस हेतु निरन्तर शोध पत्र लिखता रहा उसने अनेक रचनाऐं लिखी एवं 1895 से 45 वर्षों तक एक भूगोल पत्रिका Geographische Zeitschrift का हेटनर ने नियमित रूप से प्रकाशन एवं सम्पादन किया। इस पत्रिका के माध्यम से उसने जर्मनी के प्रमुख विद्वानो एवं स्वंय के गतिशील एवं विकसित भौगोलिक चिन्तन को जर्मन भाषा मे विश्व के समुख रखा हेटनर ने स्वयं अपनी विस्तृत रचनाओं एवं अपने सम्पर्क मे आये छात्रो एवं शोध छात्रों के माध्यम से भूगोल की अभूतपूर्व सेवा की उसके सान्निध्य मे तीस से अधिक विद्वानो ने भूगोल मे डाक्टरेट की उपाधि प्राप्त की हेटनर को कोई सन्तान नही थी उसके लिए उसके छात्र के पुत्रवत थे जिन्हे उसने सच्चा स्नेह दिया हेटनर के प्रिय शिष्यों मे प्रसिद्ध भूगोल वेता सियनर भी एक थे

(1) चीली एवं पेटागोनिया के जलवायु एवं भू विज्ञान पर लिखा गया शोध ग्रन्थ (1881)

(2) दक्षिणी अमरीका पर 1885 के बीच लिखे गये लेखो का संकलन एवं 1888 ई० मे प्रकाशित ग्रन्थ कोलम्बियाई एण्डीज की यात्राऐं

(3) सन् 1895 मे उसने उपर सद्धांत ~~सद~~ Geographische Zeitschrift नामक जर्मन भाषा की भूगोल पत्रिका का सम्पादन एवं प्रकाशन प्रारम्भ किया इस पत्रिका मे विभिन्न विद्वानो के शोध लेखों का भी समय समय पर प्रकाशन किया इसका प्रकाशन उसकी मृत्यु के बाद भी 1943 तक चलता रहा

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

हैडलबर्ग से ही 1903 मे प्रो० पीकर (Peiker)
ने प्रकाशन पुन: प्रारम्भ किया

(4) हेटनर का विश्व का प्रादेशीक दो भूगोल दो खण्डो मे प्रकाशीत हुआ 1907 मे प्रथमखण्ड यूरोप का प्रादेशीक भूगोल के नाम से और द्वितीय खण्ड 1924 मे शेष विश्व का प्रादेशीक भूगोल के नाम से बाद मे दोनो ही ग्रन्थ भूगोल का आधार के नाम से प्रकाशित

(5) 1935 ई० मे उसका तुलनात्मक प्रादेशीक भूगोल चार खण्डों मे प्रकाशीत हुआ

(6) 1905 ई० मे उसने रुस के भूगोल पर एव 1915 मे इंग्लैण्ड का विश्व प्रभुत्व एवं युद्ध पर एक राजनीतिक भूगोल लिखा

चिन्तन एवं अध्ययन विधी —

हेटनर ने भौगोलिक चिन्तन पर काण्ट - हम्बोल्ट रिटर एवं रिचथोफन के विचारो का विशेष प्रभाव पड़ा उसने भूगोल के समन्वयकारी स्वरुप को विशेष महत्व पुर्ण माना। उसने कभी भी भूगोल मे द्वैधता के विचारो को स्वीकार नही किया एव रिचथोफन एवं हेटनर के समय भूगोल का अध्ययन मे दो विचार धाराएँ प्रचलित थी एक के अनुसार भूगोल सम्पुर्ण भू पृष्ठ का विज्ञान है। दूसरी विचार धारा के अनुसार भूगोल चूंकि भू पृष्ठ का विज्ञान है एवं विश्व के सभी प्रदेशो के तुलनात्मक अध्ययन को गौण बताया। हेटनर ने भूगोल की उपयुक्त दोनो ही व्याख्याओ को असफुर्ण माना

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान

Saathi

Date __/__/__

(1) → भूतल के विभिन्न स्थानो पर विभिन्नताएं पायी जाना एक स्वभाविक लक्षण है। एक क्षेत्र की घटनाओ की लक्षणो का दूसरे स्थल पर प्राय: मेल नही बैठता

(2) भूतल पर क्षेत्रो की इन घटनाओं का स्थिति के सन्दर्भ मे सम्बन्ध रहता है। अत: क्षेत्र निर्धारण एक क्षेत्र विवेचना और भी आवश्यक हो जाती है।

(3) भूतल के छ: प्रमुख प्राकृतिक घटको - स्थल - वायु पशु वनस्पति एवं मानव में वास्तविक अन्तसम्बन्ध है। उनके विभिन्न क्रियाकलाप गतिशील है एवं एक दूसरे के जुडे हुए है। उपयुक्त विचारो एवं हार्टशोर्न के विचारो मे काफी मेल है। हार्टशोर्न ने तो यहा तक बताया कि भूतल क्षेत्र या क्षेत्रो की घटनाएं अपने आप मे स्थिर तत्व या लक्षण नही कही जा सकती है। किसी स्थान की तत्व जटिलता गतिशील है एवं अपना उसका स्तर है। इस प्रकार हेटनर ने कभी भी एवं कहीभी भौतिक एवं मानव भूगोल की द्वैधता की मनोहाती को स्वीकार किया इसी कारण वह रैटजेल के चिन्तन से भी प्रभावित नही हुआ। उसने साफ -सुथरा बताया कि भूतल के क्षेत्रो के अध्ययन मे मानव एव प्रवृती दोनो ही अनिवार्य घटक है। हेटनर के चिन्तन के आगे बढाते हुये हार्टशोर्न ने क्षेत्रो के भौगोलिक घटनाओं की जटिलता को ही विभिन्न स्तरीय तत्व जटिलता कहॉ हेटनर ने भूगोल को न तो प्राकृतिक घटनाओं का ही अध्ययन माना न ही सिर्फ मानवीय पहलुओ का ही विज्ञान बताया। वास्तव मे वस्तु स्थिति दोनो को समन्वय एवं अन्तसम्बन्ध मे निहित है।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

Saathi

Date ___/___/___

भूगोल के विकास मे जीन ब्रुश के योगदान का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए —

ब्लांश द्वारा स्थापित भूगोल की परम्परा को आगे बढ़ाने वाले फ्रांसीसी विद्वानो मे मे जीन ब्रुश का नाम अग्रगण्य है।

विडाल डी ला ब्लाश के शिष्य जीन ब्रुश का जन्म फ्रांस मे 1869 ई० हुआ था उनकी प्रारम्भिक शिक्षा स्पेन मे हुई थी उन्हे 1892 ई० मे इतिहास एवं भूगोल विषयो के साथ स्नातक उपाधि प्राप्त की।

इतिहास एवं भूगोल विषयो की अतिरिक्त उन्होंने अतिरिक्त राजनैतिक कानून एवं राजस्व तथा प्राकृतिक विज्ञानो का भी अध्ययन किया 1896 ई० मे की उनकी नियुक्ति स्विटजरलैण्ड के फ्रीवर्ग विश्वविद्यालय मे भूगोल के सहायक प्रध्यापक पद पर हो गयी 1901 ई० मे इन्होंने पेरिस मे वैज्ञानिक कालेज मे भूगोल के प्राध्यापक के रूप मे कार्य करना प्रारम्भ किया अपने जीवन काल मे भूगोल के प्राध्यापक के रूप मे कार्य अपने जीवन काल मे ब्रुश को दो बार सम्मानित भी किया गया। 1918 ई० मे उन्हे फ्रांस की अकादमी ने सम्मानित किया तथा 1927 ई० मे अपने कार्य के आधार पर वे एकेडमी द साइंस द्वारा सदस्य चुने गये

28/04/2020

प्राचार्य
मां विन्ध्यवासिनी महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया